सुकनबुरु

By:-Mahadeo Munda, Khunti

भौगोलिक स्थिति:- सुकनबुरु झारखंड राज्य के खूंटी जिला में सुकनडीह, टोटादा , दुलमी और बूड़ाडीह गांवों के बीच में है।
संक्षिप्त में कहा जाए तो, मारंगहादा इलाके का प्रथम एवं विख्यात मागेबुरु है।

सुकन बुरु का अर्थ:- सुकन बुरु भी एक संयुक्त मुण्डारी शब्द है। सुकन एवं बुरु।
कुछ मुण्डारी पूरखे कहते थे कि सुकुवान से सुकन हो गया है।
सुकन शाब्दिक अर्थ ऊंचा होता है।
सुकुवान का अर्थ मनोरंजक होता है।
बुरु के तीन अर्थ होते हैं।
प्रथम में पहाड़, दुसरे में मेला और तीसरे में, पहाड़ पर निवास करने वाले प्राकृतिक शक्ति। यानि बुरुबोंगा का ही संक्षिप्त संज्ञा है।

सुकन बुरु का लोककथा सह इतिहास:-
सुकनबुरु की शुरुआत भी आदिकाल में ही हुई थी। लेकिन सही-सही काल बताना कठिन है।
मुण्डारी लोक कथाओं से इतना ही स्पष्ट है कि, इसकी शुरुआत, प्रथम मागेबुरु, मारंगबुरु और हाईबुरु के बाद हुई है।
सोनाहातु,राहें, बुण्डु-तमाड़ से अनेक लोग शिकार करते -करते, नयी कृषि योग्य भूभाग की तलाश और नया खेत-खलिहान बनाने के उद्देश्य से पलायन किए थे।
क्षेत्र में, अधिकतम नाग, टुटी, हंस और हस्सा किली के लोग हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि, टुटी, हस्सा, नाग किली समूह के लोगों का संयुक्त मागेबुरु है।

सुकनबुरु की शुरुआत:-
सोनाहातु, राहे, बुण्डु-तमाड़ से पलायन करने वाले, मुण्डाओं को भी साल में एक बार, अगहन पुर्णिमा के दिन मागेबुरु मनाने के लिए मारंगबुरु जाना पड़ता था।

लेकिन, प्रतिवर्ष जाना, सबके लिए संभव नहीं था। बूढ़े -बूजुर्ग और छोटे बच्चों के लिए , मारंगहादा क्षेत्र से मारंगबुरु तक पैदल जाना मुश्किल था।
लेकिन, सिङबोंगा और बुरुबोंगा की पहाड़ पर, सामूहिक पूजा-पाठ और मनोरंजन के लिए, मुण्डारी लोकनृत्य का आयोजन अनिवार्य था।
इसलिए, मुण्डा पूरखों ने, समस्या का पूर्ण तो नहीं! लेकिन, आंशिक समाधान के लिए, सुकनबुरु की शुरुआत किए।

सुकनबुरु आयोजन का उद्देश्य:-
सुकनबुरु आयोजन का मूल उद्देश्य भी, मारंगबुरु के जैसा ही है। क्योंकि सुकन बुरु तो, मागेबुरु का एक विस्तार है। यह भी कह सकते हैं कि, मारंगबुरु का वैकल्पिक व्यवस्था है।
1.खेतीबारी और धान कटनी का काम निपटाने के बाद, थोड़ी राहत और खुशी मिलती है।
इसी सुनहरे अवसर को, बार्षिक मिलन समारोह के रुप में चयन किए।
2.सामाजिक ताना-बाना को बनाए रखने के लिए, साल में एक-दो बार मिलना एवं वार्तालाप अनिवार्य था।
3.प्राचीन पारम्परा एवं संस्कृति को जीवन्त रखने के लिए, सामूहिक मागेबुरु और सिङबोंगा, बुरुबोंगा की सामूहिक पूजा-पाठ अनिवार्य थी।
4.अपने कुल खानदान के लोगों से, मेहमान, कुटुंब और दोस्तों से मिलने पर, खुशी महसूस होती हैं।
5.युवाओं को अपना-अपना, प्रेम-प्रसंग बढ़ाने या जीवनसाथी की तलाश में भी सहुलियत होगी।
6.बड़े बुजुर्ग लोग, हांडियां पीते-पीते नये रिस्ते जोड़ने और समधी का संबंध बनाने की बात करते हैं। सगाई का दौर शुरू हो जाता है।
7.मनोरंजक तरीके से, धार्मिक और सामाजिक पारम्पराओं को, संस्कृति को , भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करना है।

आयोजन तिथि का चयन:-
अगहन पुर्णिमा को मारंगबुरु का आयोजन होता है।
मारंगबुरु का 9वां दिन, सुकनबुरु का आयोजन होता है।

कुछ विशिष्ट शर्त एवं विधान:-
1.मारंगबुरु होने के बाद ही आयोजन करना है।
2.अगहन पूर्णिमा से 9वां दिन या मारंगबुरु संपन्न के दिन से 9 दिन में सुकनबुरु का आयोजन होता है।
3.मागेबुरु का आयोजन से पहले वहां के स्थानीय ग्रामीणों की ग्रामसभा दुनुब होती है।
4.सामूहिक पूजा-पाठ के लिए पहाड़ पर चढ़ने के क्रम में, हाउवा करने यानि अश्लील शब्दों की नारा लगाने का भी रिवाज है।
5.पहाड़ पर पूजा करने वाला पांड़ा यानि पाहन और हातु मुण्डाओं की टोली जब पहाड़ पर चढ़ती है। तब ढोलक, नगाड़े, करतल और बांसुरी बजाए जाते हैं।
6.बूढ़े-बुजुर्ग भी य़दि, पहाड़ पर पैदल चढ़ने पर, सफल हो जाते हैं तो, उसकी गिनती, अधेड़ में की जाती हैं।
7.सुकनबुरु से पहले, इलाके लोग उरद दाल को, फोड़कर नहीं पकाते हैं। नियम भंग करने पर, शेर, बाग जैसे जंगली जानवर, आदमखोर बनी जाते हैं।
8.दुसरी बेला में, लोकनृत्य दल, चौरों दिशा से आकर, पहाड़ पर चढ़ते हैं और लोकनृत्य करते हैं। लेकिन, दल में बाहरी लोगों को नाचने की अनुमति, लोकनृत्य दल के अगुआ तय करते हैं।

9.दूर से आने वाले मेहमानों को और मुण्डारी लोकनृत्य एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, गांव-गांव में रास करम गाड़े जाते हैं।

मनाने की विधि:-

1.नये आदिवासी परिधान का जोगाड़ करना होता है।
2.धोती-साड़ी की विशेष धुलाई की जाती हैं।
3.नया चावल, दाल , खस्सी और देशी लौकी या आरु कंद का इंतजाम किए जाते हैं।
4.पताई रोटी एवं आरीसा पीठा बनाने के लिए, अरवा चावल गुंडी कूटे जाते हैं।
5.बेटी-दामाद, मामा-मामी और भगीना भगीनी सबको, मौखिक निमंत्रण दिए जाते हैं।
6.सुकनबुरु से पहले, लोकनृत्य दल के युवा, नाच-गाना का अभ्यास करते हैं।
ताकि, एक विशिष्ट शैली में, एक जैसा प्रदर्शन कर पायें।
7.युवक और युवतियां, घर का कुछ काम सुबह में निपटाकर, सामूहिक स्नान, अलग-अलग, नियत घाट या डोभा में करते हैं।
8.पहली बेला में ही पाहन और हातु मुण्डा का दल, सामूहिक पूजा-पाठ निपटा देते हैं।
9.सफेद और लाल रंग का मुर्गा को बलि देते हैं। 3 या 5 साल में बकरा बलि देने का भी दस्तूर है।
10.वापस लौटने में, रास्ता भटकने और ठंडा से बचने के लिए, टार्च लाइट और चादर या शाल पकड़ने का भी रिवाज है।
11.मेहमानों को पताई रोटी,और हांडियां पिलाकर, खस्सी मांस के साथ, खाना खिलाकर, सुकन बुरु के लिए, प्रस्थान करते हैं।
12.वापस आने के समय, नये मेहमान और दोस्तों से मुलाकात होने पर, उन्हें भी, रोटी खाने और नाचने के लिए दिल से न्योता देते हैं।

सुकन बुरु एवं मागेबुरु की हार्दिक शुभकामनाएं!